दैनिक ट्रिब्यून

लहरें

चंडीगढ़, रविवार, 29 मार्च, 2020

तेल का खेल

कच्चे तेल के दाम ज़मीन पर आ गये हैं। और इस बीच दुनिया के बड़े तेल उत्पादक देशों में नंबर वन बनने की होड़ भी तेज़ हो गई है। सऊदी अरब की दिग्गज तेल निर्माता कंपनी अरामको ने तेल आपूर्ति बढ़ाने की घोषणा की है। वहीं अब सऊदी अरब और रूस के बीच बाजार में कीमतें गिराने की होड़ बढ़ने की आशंका है। दूसरी ओर अमेरिका तेल की दुनिया का बेताज बादशाह है लेकिन रूस की कोशिश है उसे पीछे धकेल, सबसे बड़े तेल उत्पादक देश का ओहदा वापस पा लेने की।

अभिषेक कुमार सिंह



पाताल फोड़कर निकाले जाने वाले तेल की कीमतें एक ही दिन में 30 फीसदी लुढ़ककर रसातल में पहुंच जाएं, तो ऐसा खाड़ी युद्ध के बाद बीते 30 साल में एक बार भी नहीं हुआ था। लेकिन नौ मार्च 2020 को जब एशियाई बाज़ारों में कारोबार शुरू हुआ तो एक बैरल कच्चे तेल की कीमत 45 डॉलर से गिरकर 31.52 डॉलर हो गई। पहले तो लगा कि यह झटका कोरोना वायरस के खौफ से दुनिया में आ रही कारोबारी मंदी और ज़मीन सूंघते शेयर बाज़ारों की वजह से लगा है लेकिन जल्द ही इसकी असल वजह सामने आ गई। पता चला कि तेल की कीमतों को लेकर रूस से चल रही तनातनी के बीच सऊदी अरब ने उत्पादन बढ़ाकर दुनिया में तेल की बाढ़ लाने का फैसला किया है। यही नहीं, सऊदी अरब ने यह भी कहा कि वह कुछ बाजारों में वह अपना तेल 20 प्रतिशत की छूट पर बेचेगा। तेल में छिड़े इस प्राइस वॉर में सऊदी अरब के निशाने पर फिलहाल रूस दिख रहा है, क्योंकि रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की कोशिश है कि उनका देश दुनिया में सबसे ज्यादा तेल उत्पादन करने वाले मुल्क की वह पदवी वापस पा ले, जो उसने 2018 में गंवा दी थी। इस बदलाव के बाद अमेरिका तेल का सबसे बड़ा उत्पादक बन गया था, जबकि सऊदी अरब दूसरे और रूस तीसरे स्थान पर खिसक गया।

कहीं पर निगाहें, कहीं पर निशाना

जहां तक मौजूदा उत्पादन की बात है तो सऊदी अरब इस समय 97 लाख बैरल प्रतिदिन की दर से तेल का उत्पादन करता है। हालांकि उसकी क्षमता इससे ज्यादा तेल पैदा करने की है। सऊदी अरब की तेल कंपनी अरामको ने कहा भी है कि अगर सरकार चाहे तो वह अप्रैल में अपना उत्पादन करीब 27 फीसदी तक बढ़ाकर 1.23 करोड़ बैरल कर सकती है और कीमत में और भी कटौती कर सकती है। दिलचस्प यह है कि कीमतों में कटौती के आधार पर यह जंग सऊदी अरब और रूस के बीच होते हुए दिखाई दे रही है, लेकिन इसके असल निशाने पर अमेरिका है जो इस वक्त तेल उत्पादन का बेताज बादशाह बना हुआ है। इस प्राइस वॉर में भले ही अरामको कंपनी के शेयरों में भारी गिरावट हुई है, भले ही रूस से सऊदी अरब की ऊपरी तौर पर असहमति नज़र आ रही हो, लेकिन इससे सबसे ज्यादा नुकसान अमेरिकी शेल कंपनियों को होगा, जिन्हें धरती के भीतर से तेल निकालने में 50-55 डॉलर प्रति बैरल की कीमत चुकानी पड़ती है। दावा तो यह भी किया जा रहा है कि इस लड़ाई के पीछे असली दिमाग रूस का है क्योंकि वह अमेरिकी शेल कंपनियों को बर्बाद करते हुए उसकी बादशाहत छीन लेना चाहता है। इसकी फौरी वजह यह है कि ट्रंप प्रशासन ने रशियन स्टेट ऑयल कंपनी रोजनेफ्ट की सहयोगी कंपनी लसैंक्शन पर प्रतिबंधों की घोषणा की थी। रूस इसका बदला लेना चाहता है। सवाल है कि सऊदी कार्रवाई से अमेरिका को नुकसान कैसे होगा। असल में अमेरिकी शेल कंपनियों पर पहले से ही कर्ज



का भारी बोझ है। उन्हें प्रति बैरल तेल उत्पादन में 50-55 डॉलर लगाने पड़ते हैं, जबकि सऊदी कार्रवाई से ये कीमतें 31 डॉलर तक पहुंच गई हैं। अगर कीमतों में और गिरावट आई तो ज्यादातर अमेरिकी तेल कंपनियां बर्बाद हो सकती हैं। खास तौर से टेक्सस राज्य , जहां ऐसी कंपनियां सबसे ज्यादा हैं। दबाव में उन्हें तेल के उत्पादन में कटौती करनी पड़ सकती है और कीमतों में भी। यह स्थिति 2014-16 की पुनरावृत्ति जैसी होगी, जिसमें दर्जनों ऑयल और गैस कंपनियां बंद हो गई थीं और लाखों लोगों की नौकरी चली गई थी।

कैसे निपटेगा सऊदी अरब

यहां सवाल है कि उत्पादन बढ़ाने और कीमतें घटाने से उत्पन्न संकट से सऊदी अरब और रूस कैसे निपटेगा। असल में इस पूरे खेल में रूस सबसे ज्यादा सुविधाजनक स्थिति में रहेगा। ऐसा इसलिए क्योंकि



रूसी अर्थव्यवस्था तेल से होने वाली कमाई पर 37 फीसदी निर्भर है, जबकि तेल से कमाई पर सऊदी अरब की निर्भरता 65 फीसदी है। ऐसे में अगर तेल की कीमत 42 डॉलर रहती है तो रूस होने वाले घाटे को अपने बजट से संतुलित कर सकता है, जबकि सऊदी अरब के लिए यह कीमत 80 डॉलर प्रति बैरल बैठेगी। यही नहीं, रूस के पास इस समय 170,000 मिलियन डॉलर का एक सॉवरेन फंड है। यह भारी-भरकम फंड रूस ने तेल बेचकर हुई कमाई से बनाया है। तेल की कीमतों को लेकर जंग जारी रहने की स्थिति में इस फंड की बदौलत रूस हालात पर काबू रख सकता है, लेकिन अमेरिका और खुद सऊदी अरब की हालत खराब हो सकती है। अगर हालात ऐसे ही बने रहे तो सऊदी अरब की अर्थव्यवस्था के आधुनिकीकरण की योजना को पलीता लग सकता है।

भारत का क्या होगा

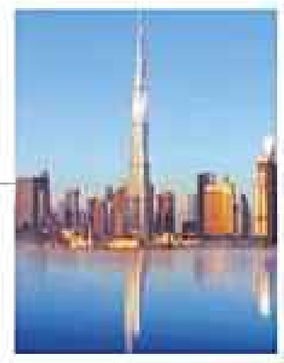
कुछ अरसा पहले तक इराक और सऊदी अरब के बाद भारत अपनी जरूरत के तेल का 12 फीसदी ईरान से आयात करता था। दो साल पहले यानी 2018 में भारत ने ईरान से सात अरब डॉलर का तेल आयात किया था। भारत का इसमें फायदा यह था कि ईरान को भुगतान भारतीय रुपये में किया जाता था लेकिन अमेरिकी प्रतिबंधों के बाद मई, 2019 से ईरान से तेल आपूर्ति तकरीबन ठप हो गई है, जिससे सऊदी अरब और इराक पर निर्भरता बढ़ी। अब हालात ये हैं कि अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में कच्चे तेल की कीमतों में प्रति बैरल एक डॉलर का इजाफा होने पर भी भारत का तेल आयात बिल 10,700 करोड़ रुपये बढ़ जाएगा। ऐसे में तेल सप्लाई में बढ़ोत्तरी और कीमतों में गिरावट का मौजूदा दौर भारत के पक्ष में है जो सऊदी, रूस और अमेरिका के बीच जारी तेल की जंग के मुताबिक ऊपर-नीचे हो सकते हैं।

आखिर बचा है कितना तेल

बीते 50 साल से तेल के विशेषज्ञों के लिए भी यह सवाल एक रहस्य ही रहा है कि आखिर दुनिया के पास कितना तेल (पेट्रोल, डीजल, गैस) है। करीब पांच साल पहले 2015 में इसकी एक जानकारी तेल निर्यातक देशों के संगठन ओपेक (ऑर्गेनाइजेशन ऑफ़ द पेट्रोलियम एक्सपोर्टिंग कंट्रीज) ने अपनी सालाना रिपोर्ट में दी थी कि अकेले सऊदी अरब के अनुमानित तेल भंडारों में 266 अरब बैरल तेल मौजूद है। इसके मुताबिक प्रतिदिन 1.2 अरब बैरल के उत्पादन के औसत के हिसाब से अगले 70 साल भी तेल का कोई संकट पैदा नहीं होने वाला है। लेकिन इन आंकड़ों को लेकर संशय की स्थिति तब बनती है, जब कोई तेल उत्पादक देश अपने भंडार का भ्रामक डाटा पेश करता है। मिसाल के तौर पर वर्ष 1987 में सऊदी अरब ने अपने भंडारों में 170 अरब बैरल तेल की मौजूदगी बताई थी, जबकि दो साल बाद ही 1989 में उसने 260 अरब बैरल के तेल भंडार होने की बात कही। खर्च के बावजूद सऊदी अरब के तेल भंडार में कोई खास कमी नहीं होने के पीछे दो वजहें देखी जा रही हैं। पहली संभावना यह है कि उसने नए तेल कुएं खोज निकाले हैं और दूसरी वजह यह हो सकती है कि जहां से उसने तेल निकाल लिया है, वहां तेल की आपूर्ति प्राकृतिक रूप से फिर से हो गई है।

अमेरिका की तलवार

दिसंबर 2018 में ऐसा पहली बार हुआ, जब अमेरिका तेल निर्यातक देश बन गया था। इस मामले में अमेरिकी ऊर्जा सूचना प्रशासन (ईआईए) ने जानकारी दी थी कि





अमेरिका हर दिन दो लाख 11 हजार बैरल कच्चा तेल और रिफाइन्ड उत्पाद विदेशों में बेचने लगा है। इससे पहले 2018 में ही अमेरिका ने औसतन हर दिन 30 लाख बैरल तेल का आयात किया था। बीते 75 वर्षों तक विदेशी तेल के आयात पर निर्भर अमेरिका की उपलब्धि इस मायने में रेखांकित करने लायक है कि वह खुद तेल का काफी ज्यादा मात्रा में उपभोग करता है। ऐसे में निर्यात करने लायक तेल बचना और उसे दुनिया को दूसरे देशों में बेचने का सीधा मतलब यही है कि अमेरिका ओपेक का खेल बिगाड़ने और तेल की कीमतों पर नियंत्रण पाने की हैसियत में है और यही बात रूस और सऊदी को परेशान कर रही है। आंकड़ों के मुताबिक रूस में 256 अरब बैरल, सऊदी में 212 अरब बैरल, कनाडा में 167 अरब बैरल, ईरान में 143 और ब्राज़ील में 120 अरब बैरल तेल है। दावा है कि अमेरिका के टेक्सास, न्यू मैक्सिको, नॉर्थ डकोटा, पेंसिलवेनिया आदि इलाकों में स्थित तेल कुओं में नाटकीय रूप से तेल उत्पादन बढ़ा है । अब असली भय ओपेक के वजूद पर आए संकट का है क्योंकि अमेरिका के तेल का उत्पाद बढ़ते ही उसकी बादशाहत खत्म होने लगेगी और उसके बाजार पर सीधा असर पड़ेगा।

नवरात्र का स्वादिष्ट आहार





नवरात्रों का खानपान हल्का फुल्का और हेल्दी हो तो बीमारियों की भी रोकथाम होती है। जीवन ऊर्जा भी भरपूर रहती है। अगर व्रत कर रहे हैं तो घर पर ही कुछ चटपटा बनाएं।

शिल्पा जैन

नवरात्र चल रहे हैं और भूख लगने पर अधिकतर लोगों के पास सिर्फ फल ही विकल्प रह जाते हैं पर ऐसा बिल्कुल भी नहीं है। आप चाहे तो नवरात्र के व्रत में भी इन चटपटी डिशेज़ का मज़ा ले सकते हैं। ऐसी ही कुछ रेसिपी हम आपसे शेयर कर रहे हैं।

चटपटी मूंगफली स्नैक्स

सामग्री : मूंगफलीः 1 कप, घी 1 टेबल स्पून, जीरा 1 टी स्पून, पिसी हुई हरी मिर्च 1/2 टी स्पून, हरा धनिया 2 टेबल स्पून, कसा हुआ नारियल ताजा पाव कप, नमक स्वादानुसार, चीनी- आधा चम्मच, नींबू का रस स्वादानुसार।

विधि : सबसे पहले मूंगफली को 2 घंटे पानी मे भिगाकर रखें। फिर उसमें थोड़ा सा नमक डालकर उसे कुकर में 1 सीटी होने तक पकाएं। अब उसका पानी निथार कर घी में जीरे का तड़का लगा कर पिसी



हुई हरी मिर्च डालें और उसे थोड़ा भून लें। उसमें उबली मूंगफली डालकर थोड़ा और भून लें। फिर बाकी सभी सामग्री मिलाएं। इसे आप स्पाइसी अपने स्वादानुसार रख सकते हैं। इसमें बारीक टमाटर और सेव डालकर भी गार्निश कर सकते हैं। चटपट मूंगफली स्नैक्स तैयार है।

कुट्टू क्रिस्पी कचौड़ी

सामग्री : कुटू का आटा 200 ग्राम, आलू 5 मीडियम उबले हुए, हरी मिर्च 1 बारीक कतरी हुई, अदरक 1 टुकड़ा कद्दूकस किया हुआ, काली मिर्च 1/4 छोटा चम्मच, अमचूर 1/4 छोटा चम्मच, काला या सेंधा नमक 1 छोटा चम्मच, तेल तलने के लिये।

विधि : कुट्टू क्रिस्पी कचौड़ी बनाने के लिए सबसे पहले सिंघाड़े के आटे में थोड़ा सा सेंधा नमक और एक बड़ा चम्मच तेल डाल कर गूंथ लें। इसके बाद आलू को छील कर उसमें हरी मिर्च, अदरक, काली मिर्च, अमचूर पाउडर और आधा छोटा चम्मच सेंधा नमक डाल कर अच्छी तरह मिला लें। अब कड़ाही में तेल डाल कर गर्म करें। जब तक तेल गर्म हो रहा है, गुंथे हुए आटे से छोटी सी लोई लेकर उसे गोल बनाएं और फिर हथेली से



दबा कर चपटा कर लें।

फिर एक चम्मच आलू का मिश्रण आटे पर रखें और उसे चारों ओर से उठा कर बंद कर दें। फिर आलू भरी लोई को हथेलियों से दबा चपटा कर लें और फिर बेल कर पूरी के आकार का बना लें। कड़ाही का तेल गर्म होने पर उसमें बेली हुई पूरी डालें और उसे पलट-पलट कर सुनहरा होने तक तल लें। कुट्टू कचौड़ी तैयार है। धनिया की चटनी के साथ परोसें।

व्रत के बिस्किट

सामग्री : राजगिरे का आटा 150 ग्राम, बेकिंग पाउडर 1 चौथाई टी स्पून, नमकः आधा टी स्पून, डेसिकटेड कोकोनट 50 ग्राम, मक्खन 125 ग्राम, पिसी हुई चीनी 100 ग्राम, वनीला एसेंस आधा टी स्पून।

विधि : राजगिरे का आटा, बेकिंग पाउडर और नमक को आपस में मिलाकर छलनी से छान लीजिए। उसमे डेसिकटेड कोकोनट मिला लीजिए। मक्खन, वनीला/कोकोनट एसेंस, चीनी को मिलाकर इस मिश्रण के सफेद और मुलायम होने तक अच्छे से फेंटिए। इसके बाद इसमें राजगिरे का आटा और कोकोनट के मिश्रण को मिलाकर उसका गोला बना लीजिए। इस गोले की पाव इंच मोटी रोटी बेलकर कुकीज कटर से उसके बिस्किट्स काटकर उन्हें बेकिंग ट्रे में रखिये। 150 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान पर पहले 10 मिनट गर्म किये ओवन में 30 मिनट तक कुकीज़ को बेक कीजिये। आपको जब भी भूख लगे आप ये बिस्किट्स खा सकती हैं। साथ ही आप इन्हें नवरात्र से पहले ही बना कर एयरटाइट जार में रख सकती है।

आगरे के पेठे की खीर

सामग्रीः आगरे का पेठाः 250 ग्राम, दूध 1 लीटर, इलायची पाउडर 1 टी स्पून, सजाने के लिए केसर 9 से 10, बादाम पिस्ते की बारीक कतरन।

विधि : सबसे पहले पेठे को कद्दूकस से कस लीजिए। दूध को गर्म करने के लिए रखें। जब दूध में उबाल आ जाए तो उसमें कसा हुआ पेठा डालकर उसे 10 मिनट तक पकाएं। जब अच्छे से पक जाए तो उसमें केसर, इलायची और बादाम पिस्ते की कतरन डालें। आप इसे चाहे तो गर्मागर्म खा सकते हैं या फिर फ्रिज में रख कर ठंडी करके भी खा सकते हैं।



epaper.dainiktribuneonline.com

सहनशीलता और चुनौतियों से निपटने का नाम...

श्रीरामकथा



लीना मेहेंदले

वाल्मीकि रामायण में कही गयी श्रीरामकथा कई अर्थों में अभूतपूर्व है। यह विश्व का आदि काव्य है और आदि इतिहास भी। महर्षि वाल्मीकि के साक्ष्य के अनुसार यह इतिहास त्रेतायुग का है, जिसके पहले सत्ययुग चलता है। अर्थात राम जन्म से भी सहस्रों वर्ष पूर्व भारत में संस्कृति एवं सभ्यता का उदय हो चुका था। समाज ने सुख-संपन्नता देखी थी, ज्ञान-विज्ञान और कलाओं का विस्तार हो रहा था, समाज धारणा के नियम बन चुके थे ; विभिन्न भूक्षेत्रों में विभिन्न राज्य थे, जो कम या अधिक संपन्न थे और अपने-अपने तरीके से प्रजा पालन में लगे हुए थे। परंतु राम जन्म के समय सज्जनों के लिए एक संकट भी उपस्थित हो चुका था और प्रतिदिन बढ़ रहा था। उस संकट का नाम था रावण।

रावण का उदय, विस्तार व प्रभाव राम जन्म के कई वर्ष पूर्व से चला आ रहा था। उसने घोर तपस्या से भगवान शिव को प्रसन्न कर अपार सामर्थ्य प्राप्त किया था, जिसे वह अब अन्याय के ही कामों में लगा रहा था। पहले उसने अपने ही सौतेले भाई कुबेर को लूटकर दक्षिण दिशा में स्थित लंका में स्वर्ण भवनों से विभूषित अपनी राजधानी बनाई। फिर उसके अनुचर अन्य प्रांतों में अपना वर्चस्व स्थापित करने लगे। वे ऋषि समुदायों को भयभीत करते, यज्ञ में विघ्न डालते और जनमानस को आतंकित कर अपनी धाक जमाते। इस प्रकार हम देखते हैं कि जब राम का जन्म हुआ, तब सामाजिक उत्थान-पतन के चक्र में समाज की अवस्था अधोमुख थी।

गुरु वशिष्ठ से शस्त्र-शास्त्र की विद्या ग्रहण कर राम ने जब सोलहवें वर्ष में पदार्पण किया तभी विश्वामित्र मुनि अयोध्या में राजा दशरथ के दरबार में पधारे और उनसे याचना की कि मैं यज्ञ के लिए दीक्षित हूं, अतः स्वयं युद्ध नहीं कर सकता। यह जानकर राक्षस मेरे यज्ञों में विघ्न उत्पन्न कर रहे हैं। इसलिए हे राजन, अपने दो पुत्र राम व लक्ष्मण मुझे सौंप दो, ताकि वे यज्ञ की रक्षा करें और आवश्यक हुआ तो यज्ञ भंग करने वाले राक्षसों का वध भी करें।

इस संवाद से जान पड़ता है कि राम के अतुलनीय शस्त्रज्ञान व शौर्य की चर्चा सब ओर फैल चुकी थी। इस प्रकार शौर्य के प्रतीक राम और लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ यात्रा पर निकले। उनके साथ वनों में समय व्यतीत किया, कई प्रकार के अनुभवों से संपन्न हुए। ताड़का और सुबाहु जैसे राक्षसों का वध करते हुए मुनियों के यज्ञ को निष्कंटक किया।

स्वाभाविक था कि उनके प्रति विश्वामित्र की शुभाशंसा जागी। वे सीता को राम के लिए योग्य वधू जानकर मिथिला नरेश जनक द्वारा रचित स्वयंवर में राम को ले गये। स्वयंवर का पण था कि सभामंडप में रखे हुए अतिविशाल शिव-धनुष पर जो प्रत्यंचा चढ़ा सके, ऐसे शक्तिमान पुरुष के साथ सीता का ब्याह होगा। बड़े-बड़े राजा, यहां तक कि स्वयं रावण भी उस धनुष को उठाने में असमर्थ रहा। लेकिन विश्वामित्र की अपेक्षा के अनुरूप ही अतिबलि राम ने धनुष को उठा लिया। इस प्रकार सीता के साथ राम का विवाह संपन्न हुआ।

> रामकथा सहनशीलता की, प्रतीक्षा की और अत्याचार पर विजय की कथा है। यह हमारी विरासत ही नहीं, बल्कि हमारे अस्तित्व की परिचायक है। ऐसी स्मृतियों की उपासना हमें निरंतर ऊर्जावान बनाती है और हमारे ज्ञानमार्ग को प्रशस्त करती है...

हर परिस्थिति सहर्ष स्वीकार

सच कहा जाए तो श्रीराम की कथा भारतीय जनमानस को अच्छी तरह अवगत है। इसलिए यहां रामकथा को बताने का उद्देश्य नहीं है। संक्षेप में इतना कहना पर्याप्त है कि विवाह के बाद राजा दशरथ ने राम के राज्याभिषेक की तैयारी की। परंतु कैकेयी के हठ के कारण राम को चौदह वर्ष का वनवास और भरत को राज्य देने के लिए वह बाध्य हुए। राम ने इस परिस्थिति को अतिसरलता व प्रसन्नता के साथ स्वीकार किया और तत्काल ही लक्ष्मण तथा सीता के साथ वनगमन किया। इस प्रकार पितृवचन पूर्ति का बड़ा आदर्श हमारे सम्मुख प्रस्तुत होता है।

रिश्तों का आदर

भरत का बंधुप्रेम भी भारतीय संस्कृति की एक मिसाल है। भरत ने अपना राज्यपद स्वीकार नहीं किया, बल्कि राम को सौंपने का प्रयास किया। राम लौटने को तैयार नहीं हुए तो भरत उनकी पादुकाएं लेकर अयोध्या वापस आये और राम के नाम से ही राज्य का प्रबंधन करते रहे। साथ ही उन्होंने राम के सम्मुख प्रतिज्ञा भी की थी कि चौदह वर्ष पूरे होते-होते यदि आपने अयोध्या में दर्शन नहीं दिए तो मैं अग्निप्रवेश करूंगा। अतः राम-लक्ष्मण की तरह राम-भरत की भी आदर्श जोड़ी मानी जाती है।

वीरता और दया

वनवास की अपनी यात्रा में राम दक्षिण की तरफ चलते गए। रास्ते में कई ऋषि-मुनियों से भेंट कर उनका आतिथ्य स्वीकार किया। उनसे संपूर्ण देश की परिस्थिति का भान भी हुआ। इसी बीच कई राक्षसों का वध भी किया। फिर पंचवटी में आकर थोड़ा स्थिर हुए। तब तक बारह से अधिक वर्ष व्यतीत हो चुके थे। पंचवटी में ही राम ने खर, दूषण नाम के भयानक क्रूर राक्षसों का वध भी किया। ये दोनों रावण के प्रमुख सेनानी थे। तब मारीच की सहायता से रावण ने सीता का हरण किया और उन्हें आकाशमार्ग से लंका में ले गया। हनुमान जी ने लंकाधिपति के बंदीस्थल में सीता को खोज लिया, तब राम ने वानरों की सहायता से समुद्र पर सेतु बनाया, जो सबको लंका तक पहुंचा सके। लंका में राम ने रावण की विशाल सेना को पराजित कर रावण समेत उसके सभी योद्धाओं का वध किया। फिर अपनी शरण में आये विभीषण को लंका की राजगद्दी पर बैठा कर राम, लक्ष्मण और सीता वापस अयोध्या आये। यहां भी राम ने एक नया आदर्श स्थापित किया। एक प्रबल शत्रु के सामने राम का न झुकना, उसका नाश करना और फिर भी उसके राज्य की कोई भी लूट न करते हुए वापस अयोध्या लौट आना, यह आदर्श भी भारतीय संस्कृति का परिचायक है।

रामकथा सहनशीलता की, तितिक्षा की, प्रतीक्षा की और अत्याचार पर विजय की कथा है। यह हमारी विरासत ही नहीं, बल्कि हमारे अस्तित्व की परिचायक है। ऐसी स्मृतियों की उपासना हमें निरंतर ऊर्जावान बनाती है और हमारे ज्ञानमार्ग को प्रशस्त करती है। इस परंपरा में राम हमारे उपास्य भी बन जाते हैं। संतों की वर्णित अनुभूतियों को मानें तो उपास्य के साथ उपासक का संवाद निरंतर चलता रहता है। इसी प्रक्रिया से हम ऋषियों की तपस्या और वर प्राप्ति की घटना को समझते हैं। इसी से हम तुलसी द्वारा राम का दर्शन पाना या रामकृष्ण परमहंस द्वारा काली माता से संवाद आदि बातें समझते हैं। इसी कारण राम की उपासना भी लाखों लोग करते आ रहे हैं।

हम पाते हैं कि भारतीय संस्कृति में सदा ही सद्गुणों का आदर और दुष्टता का तिरस्कार किया गया है। यही कारण है कि हजारों वर्षों बाद भी राम हमारे लिए आदर्श हैं। महाभारत के वर्णनानुसार वन में भटकते हुए पांडव जब अपने दुर्भाग्य के कारण निराश हो रहे थे, तब गुरु ने उन्हें राम का इतिहास सुनाकर ढाढस बंधाया।

ऐसी यह रामकथा हमारे जनमानस में कहां-कहां थी या कहें कि कहां-कहां नहीं थी। उत्तर से दक्षिण तक और पूरब से पश्चिम तक। सुदूर पूर्व अर्थात इंडोनेशिया, थाईलैंड और कोरिया तक देश राम से अपना संबंध बताते हैं। योगवासिष्ठ के एक वर्णन के अनुसार अफगानिस्तान में (तब का गांधार) भी राम ने भ्रमण किया है। संथाल परगना, बस्तर और पूरे दक्षिण भारत के वनवासी इलाके रामकथाओं से भरे पड़े हैं। समाजशास्त्र का एक नियम बताया जाता है कि जब किसी सभ्यता में कोई अत्यंत प्रभाव डालने वाली घटना घटती है, तो वह उस समाज की सामूहिक स्मृति का अध्याय बन जाती है।

कथा सार

जब अश्वत्थामा ने ली पांडव पुत्रों की जान...

महाभारत का युद्ध जिस दिन समाप्त हो गया, उस दिन श्रीकृष्ण पांडवों के साथ शिविर में नहीं लौटे। वे सात्यकि और पांडवों को लेकर शिविर से दूर वहां चले गये, जहां युद्धकाल में द्रौपदी तथा अन्य रानियां रहती थीं। उसी रात द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा ने पांडवों के शिविर में आग लगा दी और पांडव पक्ष के बचे हुए वीरों को सोते हुए ही मार डाला। उसने द्रौपदी के पांचों पुत्रों को भी मार दिया।

सुबह कृष्ण के साथ पांडव लौटे। शिविर की दशा देखकर उन्हें जो दुख हुआ उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। महारानी द्रौपदी की व्यथा का पार नहीं था। उनके पांचों पुत्रों के मस्तकहीन शरीर सामने पड़े थे। 'मैं हत्यारे अश्वत्थामा को इसका दंड दूंगा। उसका कटा मस्तक देखकर तुम अपना शोक दूर करना।' अर्जुन ने द्रौपदी को आश्वासन दिया और श्रीकृष्ण के साथ रथ में बैठकर चल पड़े। अश्वत्थामा ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करके भी बच नहीं सका। अर्जुन ने उसे पकड़ लिया, किंतु गुरुपुत्र का वध करना उन्हें उचित नहीं जान पड़ा। रस्सियों से बांधकर रथ में डालकर वह उसे ले आए और द्रौपदी के सम्मुख खड़ा कर दिया। अश्वत्थामा को देखते ही भीमसेन ने दांत पीसकर कहा, 'इस दुष्ट को तत्काल मार देना चाहिये। इसे एक क्षण भी जीवित रहने का अधिकार नहीं।'

दयामयी द्रौपदी की दशा ही भिन्न थी। पांच पुत्रों की लाश सम्मुख पड़ी थी और उनका हत्यारा सामने खड़ा था; किंतु उन दयामयी को पुत्र-शोक भूल गया। पशु समान बंधे, लज्जा से मुख नीचा किए अश्वत्थामा को देखकर वह पांडवों से बोलीं, 'जिनकी कृपा से आपने अस्त्रज्ञान पाया है, वे गुरु द्रोणाचार्य ही यहां पुत्र के रूप में खड़े हैं; इन्हें झटपट छोड़ दीजिये। पुत्र-शोक कैसा होता है, यह मैं अनुभव कर रही हूं। इनकी पूजनीय माता कृपी देवी को यह शोक न हो। वे मेरे समान रुदन न करें। इन्हें अभी छोड़िये।' द्रौपदी की दया विजयिनी हुई। अश्वत्थामा के मस्तक की मणि लेकर अर्जुन ने उसे छोड़ दिया। *(श्रीमद्भागवत)*

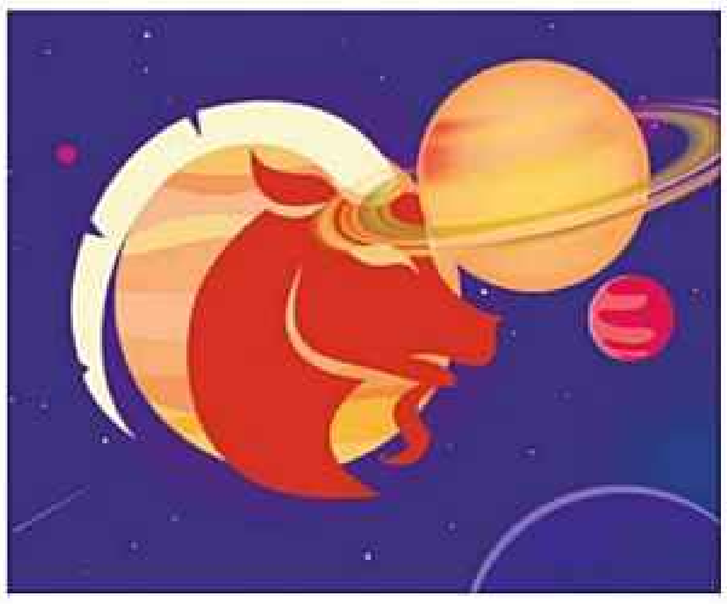
कल बृहस्पति का मकर राशि में प्रवेश

वृश्चिक, मकर, मीन का मान बढ़ाएगी ग्रहों की युति

मदन गुप्ता सपाटू



बृहस्पति ग्रह का 30 मार्च को अपनी राशि धनु से शनि की राशि मकर में प्रवेश होगा। इससे पहले 22 मार्च को मंगल भी मकर में प्रवेश कर चुका है। शनि पहले ही मकर में है। वहीं, शुक्र ग्रह का 28 मार्च से वृष राशि में प्रवेश हो चुका है। किसी भी ग्रह के स्थान परिवर्तन करने से सभी राशियों पर उसका अच्छा व बुरा प्रभाव देखने को मिलता है। चार ग्रहों की यह विशेष युति भी सभी राशियों को प्रभावित करेगी। वृश्चिक, मकर और मीन राशि के जातकों के लिए समय अच्छा रहेगा।



मेष : बृहस्पति, शनि और मंगल- ये तीनों ग्रह दशम स्थान में रहेंगे। राशि स्वामी मंगल उच्च का रहेगा, अतः कार्य की अधिकता करने वाला होगा। विवादों में विजय दिलाने वाला होगा। पद प्राप्ति होगी। परिश्रम एवं पराक्रम में वृद्धि, पिता से लाभ, मनोबल वृद्धि होगी। क्रोध पर नियंत्रण रखें।

वृषभ : तीनों ग्रह नवम स्थान में रहेंगे। अत्यंत सचेत रहें। विचारों में द्वंद्व रहेगा। आय अच्छी रहेगी, पर संतुष्टि नहीं हो पाएगी। मूल्यवान सामान गुम हो सकता है। धन का लेन-देन नकदी में करने से बचें। भाग्य एवं धन वृद्धि, आय में वृद्धि, राज्य से लाभ, पराक्रम एवं सम्मान में वृद्धि का भी योग है।

मिथुन : अत्यंत सावधानी से रहने का समय होगा। स्वयं पर नियंत्रण रखें। जोखिम के कार्यों से दूरी बनाएंगे, तो बेहतर रहेगा। शत्रु हावी होने का प्रयास करेंगे। क्रोध एवं वाणी में तीव्रता, पेट की समस्या, धन वृद्धि में अवरोध रहेगा, हालांकि पराक्रम में वृद्धि होगी।

कर्क : इस राशि के ठीक सामने सप्तम स्थान पर तीनों ग्रहों की युति होगी। इस युति से लाभ-हानि बराबर रहेगी। किसी प्रकार के बड़े नुकसान की संभावना नहीं है। कुछ योजनाएं बिगड़ सकती हैं एवं कुछ नयी सफल भी होंगी। दाम्पत्य में तनाव, वाणी में तीव्रता, क्रोध में वृद्धि रह सकती है, हालांकि सरकारी लाभ, राज्य लाभ, सम्मान में वृद्धि का भी योग है।

सिंह : तीन ग्रहों की यह युति विरोधियों का शमन करने वाली भी होगी और बढ़ाने वाली भी। विचलित भी रखेगी। क्रोध को बढ़ा सकती है। संयम से लाभ होगा।

कन्या : नौकरी में बदलाव के साथ आर्थिक लाभ भी प्राप्त होगा। जमीन से लाभ एवं संतान से सुख मिलेगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, हालांकि अचानक खर्च में वृद्धि भी होगी।

तुला : संभलकर रहने का समय है। योजनाएं बिगड़ सकती हैं। विरोधी नुकसान पहुंचाने का प्रयास करेंगे। कीमती सामान की सुरक्षा करें एवं वाहन का प्रयोग करने में सावधानी रखें। दाम्पत्य को लेकर चिंता रह सकती है, हालांकि पराक्रम और भाग्य वृद्धि का योग है। पिता का सहयोग मिलेगा।

वृश्चिक : भाइयों से प्रेम बढ़ेगा और सहयोग मिलेगा। विरोधी परास्त होंगे। व्यापार में आगे बढ़ने के मौके प्राप्त होंगे। पराक्रम में वृद्धि, राज्य लाभ, भाग्य वृद्धि, धन लाभ की स्थिति का योग है।

धनु : स्थाई संपत्ति को लेकर लाभकारी समय है। समस्याओं का समाधान प्राप्त होगा। भाग्य में वृद्धि और संतान से लाभ का योग है। पेट की समस्या रह सकती है। वाणी पर नियंत्रण रखें।

मकर : यह युति सफलता दिलाने वाली होगी। शनि के कारण सम्मान एवं धन की प्राप्ति होगी। मंगल के कारण शत्रु परास्त करने में सफलता मिलेगी। हालांकि, बृहस्पति नीच का होने के कारण कुछ दिक्कतें आ सकती हैं। क्रोध पर नियंत्रण रखें।

कुंभ : यह युति खर्च बढ़ाने वाली होगी। काम में मन नहीं लगेगा। एक के बाद एक समस्याएं आ सकती हैं। हालांकि, पराक्रम में वृद्धि का भी योग है।

मीन : समस्याओं का निदान होगा। विरोधी परास्त होंगे। मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। धन लाभ और संपत्ति में वृद्धि हो सकती है। राज्य से लाभ, रोग, ऋण शत्रुओं पर विजय का योग है।

> जिन राशि के जातकों के लिए गुरु कष्टकारी हो, वे बृहस्पति स्तोत्र, बृहस्पति कवच का पाठ करें। गुरुवार का व्रत करें, पीले धान्य का भोजन करें एवं पीले वस्त्र गुरुवार को धारण करें। श्रीहरि का नियमित पूजन करें। पीपल, केले के वृक्ष का पूजन करें। गुरु यंत्र को घर में स्थापित करके पूजन करें। पीले वस्त्र, चने की दाल, पीतल, कांसा पात्र, हल्दी, रामायण, गीता आदि दान करें।

धर्म वाक्य

दोस पराए देखि करि, चला हसन्त हसन्त, अपने याद न आवई, जिनका आदि न अंत।

कबीर दास जी कहते हैं- यह मनुष्य का स्वभाव है कि जब वह दूसरों के दोष देख कर हंसता है, तब उसे अपने दोष याद नहीं आते, जिनका न आदि है न अंत।

व्रत-पर्व

29 मार्च : श्री (लक्ष्मी पंचमी), नाग पंचमी, नाग व्रत, नागपंचमी (बंगाल)

30 मार्च : स्कंद-षष्ठी व्रत, सूर्य षष्ठी व्रत- बिहार, अशोका षष्ठी बंगाल

31 मार्च : द्विपुष्कर योग (सायं 6.44 तक) महानिशा पूजा, अन्नपूर्णा परिक्रमा रेणुका देवी मेला (उत्तरकाशी), बिस्सू त्योहार (जौनपुर), विखोत मेला-वटेपूजै-द्वाराहाट

1 अप्रैल : श्री दुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति, अशोकाष्टमी, बुधाष्टमी-योग, मेला बाहूफोर्ट (जम्मू)-कांगड़ा देवी, नैना देवी (हि.प्र.), ओली आरंभ (जैन)

2 अप्रैल : मेला रामबन, श्री राम नवमी, श्री दुर्गानवमी, नवरात्र समाप्त, श्रीरामचरितमानस जयंती, साई बाबा उत्सव प्रारंभ, स्वामी नारायण जयंती

3 अप्रैल : नवरात्र व्रत पारणा, जवारे विसर्जन

4 अप्रैल : कामदा एकादशी व्रत, लक्ष्मी कान्त दोलोत्सव

-सत्यव्रत बेंजवाल